Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 GISRRJ | Volume 7 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095
doi : https://doi.org/10.32628/GISRRJ

सामाजिक–सांस्कृतिक स्वरूप में परिवर्तन : कौशाम्बी जनपद के विशेष संदर्भ में

डॉ0 रेशमा सिंह
(भूगोल विभाग) वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ0प्र0

Article Info

Article History
Accepted : 20 May 2024
Published : 30 May 2024
Publication Issue :
Volume 7, Issue 3
May-June-2024
Page Number : 57-63

शोधसारांश : कौशाम्बी जनपद में पिछले दो दशकों में सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक संरचना के स्वरूप में व्यापक स्तर पर परिवर्तन हुआ है फिर भी कुछ परम्परागत मूल्य क्षेत्र में अपनी निरंतरता बनाए हुए है, विशेषकर आर्थिक स्वरूप में सकारात्मक परिवर्तन एवं नए क्षेत्रों के विस्तार से अध्ययन क्षेत्र में व्यक्तियों का जीवन स्तर उच्च हुआ है परन्तु यह परिवर्तन अपेक्षाकृत मंद है, जिसका प्रमुख कारण एक बड़े वर्ग का अशिक्षित एवं गरीब होना है। अतः इन समस्याओं में सुधार के लिए विशेष प्रयास करना होगा ताकि अध्ययन क्षेत्र की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में समृद्धि लायी जा सके।

मुख्य शब्द : सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, कौशाम्बी जनपद, व्यक्ति, जीवन, मूल्य।

विद्यमान सामाजिक संरचना में हुए सुधार या परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन के रूप में जाना जाता है। क्षेत्र विशेष में समय के साथ लोगों के जीवन जीने की पद्धति में हुए बदलाव को सांस्कृतिक परिवर्तन कहा जाता है, जिसका स्वरूप मूर्त एवं अमूर्त दोनों हो सकता है। अगस्त काम्टे के अनुसार वर्तमान सामाजिक स्वरूप में बौद्धिक विकास के कारण समाज में आए परिवर्तन को सामाजिक विकास कहते हैं। इसी प्रकार कार्लमार्क्स के अनुसार 'उत्पादन के स्वरूप एवं स्वामित्व में हुए परिवर्तन से सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न होता है जिसमें प्रौद्योगिकी का प्रभाव विशेष स्थान रखता है। वहीं जॉनसन महोदय ने 'सामाजिक परिवर्तन को सामाजिक संरचना में हुए परिवर्तन के रूप में पारिभाषित किया है।'

विभिन्न विद्वानों के विचारों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि समय के साथ मानव के सामाजिक स्वरूप में प्रभावी सामूहिक परिवर्तन होता रहता है, इसे ही सामाजिक परिवर्तन के रूप में जाना है, जिसमें मुख्य रूप से संज्ञानता में वृद्धि, समाज के कौशल क्षमताएवं जटिलता में वृद्धि तथा आधुनिक विज्ञान तकनीकि एवं औद्योगिक विकास की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

सामाजिक परिवर्तन के स्वरूप में परिवर्तन के चक्रिय स्वरूप की अवधारणा के अंतर्गत भारतीय विद्वानों का मत विचारणीय है जिसके अंतर्गत सामाजिक परिवर्तन एक चक्रिय प्रक्रिया है, जिसमें सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलयुग के क्रम में समाज में परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। कुछ पाश्चात्य विद्वान भी समान अवधारणा से सहमत दिखते हैं जैसे स्पेन्गलर सामाजिक परिवर्तन को सांस्कृतिक उद्भव के रूप में देखते हैं जिसका प्रारम्भ जन्म से होता है तथा क्रमशः तरुणावस्था, प्रौढ़ावस्था तथा पतन के चरण के साथ बिखराव की ओर अग्रसर हो जाता है। इन्होंने सामाजिक परिवर्तन के प्रारम्भ को संस्कृति तथा अंत को सभ्यता की उपमा प्रदान की है। अर्नाल्ड टायनबी ने भी सामाजिक परिवर्तन के अपने सिद्धान्त में दो मुख्य तथ्यों, चुनौतियों एवं प्रक्रियाओं पर विशेष जोर देते हुए बताया है कि समाज का विकास तभी होता हे, जब वह चुनौतियों का सामना करता है तथा इसके अनुसार प्रतिक्रिया कर स्वयं के स्वरूप का निर्माण करता है।

सामाजिक परिवर्तन का प्रतिरूप परिस्थिति एवं क्षेत्र विशेष के अनुसार निर्धारित होता है। मैकाइवर एवं पेज ने सामाजिक परिवर्तन के प्रतिरूप को मुख्य रूप से तीन भागों में वर्गीकृत किया है–

1. वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकीय नवाचार का प्रभाव प्रत्येक क्षेत्र में सामाजिक परिवर्तन के स्वरूप पर प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिलता है, जिसके अंतर्गत परिवर्तन त्वरित न होकर एक क्रमिक एवं सामूहिक परिवर्तन के रूप में होता है, जिसके अंतर्गत समाज के विभिन्न क्षेत्रों के तत्वों में नवीन प्रौद्योगिकीयाँ तथा विचार पुराने प्रचलित तत्वों एवं विचारों का स्थान धीरे–धीरे ग्रहण कर लेते हैं। वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी का यह प्रारूप गत्यात्मक होता है, जिससे समाज का स्वरूप भी सदैव गतिशील बना रहता है।
2. आर्थिक एवं जनांकिकीय विकास प्रतिरूप मानव गतिविधियों पर निर्भर होता है जिसका प्रभाव समाज के कार्यात्मक स्वरूप एवं जनसंख्या विकास के रूप में दिखता हैं, यहाँ विकास का अर्थ सकारात्मक परितर्वन से होता है परन्तु कभी–कभी यह परिवर्तन नकारात्मक होता है, जो समाज को पीछे की ओर ले जाता है, जबकि वैज्ञानिक एवं नवाचार प्रारूप में विकास सदैव आगे की ओर ही होता है क्योंकि प्रौद्योगिकी पुरातन स्वरूप को प्रतिस्थापित कर चुकी होती है।
3. सांस्कृतिक एवं जीवनशैली परिवर्तन प्रतिरूप के अंतर्गत समाज में एक निश्चित समय अंतराल पर जीवनशैली रहन–सहन एवं संस्कृति के स्वरूप में परिवर्तन देखने को मिलता है। कभी–कभी यह परिवर्तन अत्यंत त्वरित होता है तथा इसका स्वरूप अत्यंत उतार–चढ़ाव से भरा होता है। वहीं कई बार दूसरा स्वरूप चक्रिय भी होता है। जैसे मनुष्य के पहनावे में कई बार पुरानी संस्कृति के लक्षण दिखाई देते हैं। कई बार नई एवं पुरानी संस्कृति के लक्षण साथ–साथ दिखाई देते हैं। इस प्रकार के

विकास से समाज के स्वरूप में सांस्कृतिक विविधता का विस्तार होता है तथा समाज में खुलापन लाने का प्रयास करते जो कि सामाजिक विकास की दृष्टिकोण से सकारात्मक परिवर्तन हैं।

इस प्रकार परिवर्तन एवं निरंतरता दोनों समाज के प्रमुख गुण है, जो समाज के जटिल नियमों द्वारा निर्धारित होती है, यहीं तकनीकि विकास, सामाजिक सौहार्द, विभेद एवं चुनौतियाँ समाज में परिवर्तन के लिए जिम्मेदार हैं। जब समाज में चुनौतियाँ एवं विभेद उत्पन्न होते हैं तो उन चुनौतियों से पार होने के लिए विभिन्न नवीन एवं विभेदीकृत तथ्यों का सहारा लेते हैं जिनका परिणाम समाज के स्वरूप परिवर्तन के रूप में सामने आता है।

सामाजिक परिवर्तन के लिए विभिन्न विद्वान विभिन्न कारकों को जिम्मेदार ठहराते हैं जैसे–कार्लमार्क्स एवं बेबोलान सामाजिक परिवर्तन के लिए आर्थिक कारक जैसे आर्थिक गतिविधियाँ एवं उनके वितरण को प्रमुख कारक मानते हैं, वहीं अगस्त काम्टे एवं हाब्स विकास के प्रभाव को सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख कारक मानते हैं। इसी प्रकार अन्य विद्वान नवाचार एवं विस्तार को समाज में परिवर्तन का कारक मानते हैं। इस प्रकार समाज को प्रभावित करने वाले कुछ प्रमुख कारक क्षेत्र विशेष के भौगोलिक एवं जैविक कारक, सांस्कृतिक कारक, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकीय कारक, जनांकिकीय एवं आर्थिक कारक तथा राजनैतिक एवं मनोवैज्ञानिक कारक है जिसमें मार्क्सवाद, समाजवाद और पूँजीवाद की विचारधारा तथा राजनैतिक व्यवस्थाएँ प्रमुख हैं। इनके परिणामस्वरूप सामाजिक परिवर्तन सांस्कृतिकरण, आधुनिकीकरण, पश्चिचमीकरण एवं सामाजिक गतिशीलता के रूप में सामने आता है।

कौशाम्बी जनपद के सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन में परंपरागत सामाजिक मूल्यों व विश्वासों की प्रमुख भूमिका रही है। कौशाम्बी जनपद की प्राचीन ऐतिहासिक समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा रही है। यह जनपद तीन प्रमुख भारतीय धर्मों हिन्दू, बौद्ध व जैन की पुण्यभूमि रही है जिनके अभिलक्षणीय गुण व परम्परागत परम्पराएं मान्यताएं अभी भी क्षेत्र में गहराई के साथ विद्यमान है। कौशाम्बी जनपद में लगभग 85 प्रतिशत जनसंख्या हिन्दू धर्म से संबंधित है अतः प्राचीन हिन्दू मान्यताएँ यहाँ जनसाधारण के दैनिक जीवन के साथ–साथ मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति में प्रभावी स्थान रखती हैं जैसे कर्म या पुण्य और पाप की मान्यता। साथ ही अनेक धर्मों और पंथ की सम्मिलित सांस्कृतिक परम्पराओं के एक साथ रहने के कारण क्षेत्र में एक विशिष्ट मिश्रित संस्कृति और धार्मिक सहिष्णुता देखने को मिलती है। क्षेत्र में विभिन्न जातियों के निवासी होने के कारण क्षेत्र में उनके परम्परागत अभिलक्षणीय गुण या तत्व परिलक्षित होते हैं, जो उनके सामाजिक–आर्थिक गतिविधियों में भी परिलक्षित होते हैं। कौशाम्बी में सामाजिक, सांस्कृतिक परिवर्तन को प्रभावित करने के मुख्य तत्वों में प्रौद्योगिकीय विकास के कारण,

नवाचारों का प्रभाव, शिक्षा का प्रसार, महिलाओं की परंपरागत स्थिति में सुधार तथा प्रयागराज महानगर का प्रभाव क्षेत्र शामिल है।

कौशाम्बी जनपद में अधिकतर जनसंख्या (92 प्रतिशत) ग्रामीण है तथा नगरीय क्षेत्र अत्यंत कम (7.9 प्रतिशत वर्ष 2011 जनगणना) है अतः नगरीय नवाचारों का प्रभाव अभी भी सीमित रूप में दिखता है। परिवारों का स्वरूप अभी भी संयुक्त परिवार के रूप में है हालांकि आर्थिक कारणों से नगरीय क्षेत्र की ओर पलायन अब एकल परिवार के प्रचलन को बढ़ावा दे रहा है। कौशाम्बी जनपद में आर्थिक नवाचारों की कमी के कारण विभिन्न जातियाँ अपने पारंपरिक व्यवसायिक संरचना से इतर अधिक लाभकारी व्यवसायों या सेवाओं में संलग्न होती जा रही है, जिससे पिछड़ी व अति पिछड़ी जातियों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। परिणामस्वरूप जो सामाजिक उत्थान के रूप में भी परिलक्षित होती है, इसी कारण क्षेत्र में अस्पृश्यता जैसी सामाजिक बुराइयाँ अपेक्षाकृत कम हुयी हैं। प्रयागराज जनपद के छाया क्षेत्र के कारण जनपद कौशाम्बी की संस्कृति पर प्रयागराज जनपद की संस्कृति का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन के प्रमुख कारकों के रूप में दिखता है। विशेषकर खान–पान, रहन–सहन एंव आवासीय प्रतिरूप में इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

कौशाम्बी जनपद के सामाजिक परिवर्तन के स्वरूप के विश्लेषण हेतु पारिवारिक संरचना में हुए परिवर्तन का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि क्षेत्र के अधिकांश परिवार अभी भी संयुक्त प्रकृति के हैं, इसका कारण कौशाम्बी में नगरीय एवं पश्चिमीकरण का प्रभाव अत्यंत सीमित होना है। हालांकि समय के साथ परिवार के औसत सदस्य संख्या में कमी देखने को मिलती है जो वर्ष 2001 में 5.9 सदस्य प्रति परिवार थी वह वर्ष 2011 में 5.76 सदस्य प्रति परिवार हो गई है। नगरीकरण, आधुनिक शिक्षा प्रसार व महिला शिक्षा में वृद्धि तथा संचार विशेषकर सिनेमा की पहुंच में वृद्धि एवं पाश्चात्यकरण के प्रभाव के कारण अध्ययन क्षेत्र में परिवार की संरचना में तेजी से बदलाव हो रहा है और एकाकी परिवार की धारणा में वृद्धि हो रही है। परम्परागत संयुक्त परिवार के नियमों एवं आदर्शों में गिरावट होने से परिवार के सदस्यों में व्यक्तिवाद की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है जिससे परिवार की परम्परागत संरचना जैसे ज्येष्ठ–कनिष्ठ संबंध एवं सबसे ज्येष्ठ सदस्य की मुखिया की भूमिका समाप्त हो रही है। जिसके कारण संयुक्त परिवार की संख्या में तेजी से गिरावट आ रही है। संयुक्त परिवार की संख्या में गिरावट का एक प्रमुख कारण परिवारों की आर्थिक व्यय में वृद्धि भी है जिससे लोग एकाकी एवं लघु परिवारों की ओर अग्रसर हो रहे हैं। परिवारों के आर्थिक असुरक्षा के कारण आर्थिक अवसरों की तलाश में होने वाला नगरीय प्रवास भी एकाकी परिवारों की संरचना को बढ़ावा दे रहा है। इसके अतिरिक्त परिवारों की औसत संख्या में कमी का प्रमुख कारण सरकार द्वारा परिवार नियोजन की नीतियों को

प्रभावी ढंग से संचालित किया जाना है, जिसके अंतर्गत गर्भनिरोधक उपायों में व्यापक स्तर पर वृद्धि देखी गई जो वर्ष 2014 में 35 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2019 में 62.5 प्रतिशत हो गयी है। जिसमें सर्वाधिक योगदान महिला नसबंदी, कंडोम एवं गर्भनिरोधक गोलियों का है।

भारतीय संस्कृति में परिवार निर्माण की मूल संस्था विवाह है, जिसमें विवाह की उम्र, वैवाहिक रीतियों एवं विभिन्न परम्पराओं में परिवर्तन समाज के सामाजिक–सांस्कृतिक स्वरूप को प्रत्यक्ष तौर पर प्रभावित करता है। कौशाम्बी जनपद में सर्वाधिक स्त्रियों के विवाह 17–24 वर्ष के आयु के भीतर होता है। जनपद में स्त्रियों की औसत वैवाहिक उम्र 21.9 वर्ष है, जबकि पुरूषों की औसत वौवाहिक उम्र 24. 7 वर्ष है। कौशाम्बी जनपद में बाल विवाह जैसे कुरीतियों का प्रचलन प्राचीन काल से ही रहा है जिसमें स्वतंत्रता पाश्चात्य तेजी से सुधार हुआ परन्तु आज भी कुल वार्षिक विवाहों में 2.2 प्रतिशत स्त्रियाँ 18 वर्ष से कम आयु की है, जिसमें 10–14 वर्ष तक की बालिकाएँ भी सम्मिलित हैं। जबकि पुरुषों में बाल विवाह (21 वर्ष से कम) का प्रतिशत 8.8 प्रतिशत है। इस प्रकार की प्रवृत्ति क्षेत्र के सामाजिक विकास की दृष्टिकोण से यह अत्यंत चिंतनीय विषय है।

कौशाम्बी जनपद में वैवाहिक कार्यक्रमों के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन पिछले दो दशकों में देखने को मिला है। ग्रामीण क्षेत्रों से इतर नगरीय क्षेत्रों में अधिकांश विवाह अब पैतृक आवास से न होकर मैरिज हॉल से सम्पन्न हो रहे हैं। साथ ही दहेज प्रथा के लिए विभिन्न नियम व कानून लाए जाने के बाद भी समाज में इसकी स्वीकार्यता प्रगाढ़ हुई है। वैवाहिक स्वरूप के अंतर्गत अधिकांश विवाह आज भी पारिवारिक सहमति से सम्पन्न हो रहे हैं हलांकि स्वयं की पसंद से होने वाले विवाहों में वृद्धि देखी गई है, जिसमें अंतरजातीय विवाह भी सम्मिलित है। शैक्षिक दृष्टि से विशेषकर महिला शिक्षा में सुधार से स्त्रियों की विवाह की औसत उम्र में वृद्धि हुई तथा दहेज प्रथा जैसी प्रथाओं में कमी परिलक्षित होती है।

सांस्कृतिक दृष्टिकोण से परिधान एवं जीवनशैली का विशेष महत्व होता है क्योंकि यह धर्म, जाति विशेष के पारंपरिक मूल्यों से सम्बद्ध होता है जिसमें आधुनिकीकरण के साथ क्रमगत परिवर्तन परिलक्षित होता रहता है। कौशाम्बी जनपद विभिन्न धार्मिक समूहों के सम्मिश्रण वाला क्षेत्र रहा है अतः इसके जीवनशैली एवं परिधान में भी मिश्रित स्वरूप देखने को मिलता है जिसमें हिन्दू धर्म से संबंधित शैलियों का व्यापक प्रभाव दिखता है। समय के साथ संचार के साधनों जैसे टेलीफोन, चलचित्र तथा इंटरनेट पहुंच एवं विशेषीकृत बाजार पहुंच सुनिश्चित होने से व्यक्ति के परिधान एवं जीवनशैली में पाश्चात्यकरण का प्रभाव तेजी से देखने को मिला है जिसने परम्परागत वस्त्र आभूषण एवं जीवन शैली में व्यापक परिवर्तन कर उनका स्थान ग्रहण कर लिया है। कौशाम्बी जनपद में विशेषकर पिछड़ी

जातियों एवं जनजातीय समूहों के परिधान एवं जीवनशैली में परिवर्तन नगण्य है, वे परम्परागत जीवनशैली के अनुसार वस्त्र इत्यादि धारण करते हैं।

कौशाम्बी जनपद में विभिन्न आधुनिक सेवाओं जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा परिवहन एवं संचार तथा बाजार पहुंच के विस्तार से जनपद के प्रत्येक सामाजिक–सांस्कृतिक पक्षों में सुधार प्रभावी रूप में परिलक्षित होता है। विशेषकर स्वास्थ्य सेवाओं जिसके अन्तर्गत संस्थागत प्रसव में वृद्धि, संचारी रोगों से बचाव हेतु टीकाकरण एवं आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाओं में विस्तार से कौशाम्बी जनपद में स्वस्थ मानव संसाधन एवं जनसमूह का निर्माण संभव हो पाया है। पिछले 20 वर्षों में कौशाम्बी जनपद में ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार में वृद्धि हुई है। जनपद में एक जिला चिकित्सालय, 4 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, 34 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा 166 स्वास्थ्य उपकेन्द्र का विस्तार पाया जाता है। इससे जनपद के अधिकांश जनसंख्या स्वास्थ्य सेवाओं से लाभान्वित हो पा रही है। इसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में विस्तार से कौशाम्बी जनपद की सामाजिक संरचना में वृहद परिवर्तन हुआ है, विशेषकर महिला शिक्षा के विस्तार के परिणामस्वरूप महिला सशक्तिकरण से महिलाओं की भागीदारी समाज के हर क्षेत्र तक हो पायी है। इसी प्रकार बाजार पहुंच एवं संचार के कारण मानव जीवन शैली, रहन–सहन एवं त्यौहारों एवं सामाजिक कार्यक्रमों में नवीन एवं आधुनिक तत्वों का समावेश हुआ है।

इस प्रकार कौशाम्बी जनपद में पिछले दो दशकों में सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक संरचना के स्वरूप में व्यापक स्तर पर परिवर्तन हुआ है फिर भी कुछ परम्परागत मूल्य क्षेत्र में अपनी निरंतरता बनाए हुए है, विशेषकर आर्थिक स्वरूप में सकारात्मक परिवर्तन एवं नए क्षेत्रों के विस्तार से अध्ययन क्षेत्र में व्यक्तियों का जीवन स्तर उच्च हुआ है परन्तु यह परिवर्तन अपेक्षाकृत मंद है, जिसका प्रमुख कारण एक बड़े वर्ग का अशिक्षित एवं गरीब होना है। अतः इन समस्याओं में सुधार के लिए विशेष प्रयास करना होगा ताकि अध्ययन क्षेत्र की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में समृद्धि लायी जा सके।

संदर्भ–

1. Comte, Auguste (1855) (H. Mastineau, Trans), The Positive Philosophy of Auguste Comte, Blanchand, New yourk.
2. District Census Handbook 2001 & 2011, Census of India, office of the Registrar general & census commissioner, Government of India.
3. Ginsberg, Norries (1921), "The Psychology of Society"

4. Lewis, Oscar (1958), Village life in Northern India, New York, p-73-74
5. Maciver, R.M. and C.H. Page, Society, An Introductory Analysis, London, 1962 page-209
6. Nadel, S.F. (1957), The Theory of Social Structure, Kohan & Waste, London.
7. National family health survey 04 (2014) & 05 (2019)
8. Spencer, Herber, (1885), "Principle of Sociology"
9. Spengler, Oswall (1918), "The declining of West"